# अंजोरिया

भोजपुरी के इण्टरनेट पत्रिका

बैशाख अंजोरिया 2061 विक्रमी / मई 2004 ईस्वी साल: 1 अंक: 9-10

## एह अंक में :


| | | |
|---|---|---|
| भोजपुरी कविता में वियोग | भगवती प्रसाद द्विवेदी | 2 |
| नेम प्लेट | माला वर्मा | 4 |
| अँखिया के पुतरी | डा0 बृजेन्द्र सिंह बैरागी | 5 |
| भूख | राम लखन विद्यार्थी | 5 |
| कजरी | त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम' | 7 |

सम्पादकीय के बहाने

# भोजपुरी के मान्यता आ लिखनिहारन के कमी

डा.राजेन्द्र भारती

चुनाव के मउसम चलत बा। गांव गांव, नगर नगर प्रत्याशी लोग चक्कर काटत बा। फेरु एगो मउका भोजपुरिहा समाज के मिलल बा कि उ अपना भासा के मान्यता दिआवे के कोशिश करि सको। जेह भी वोट मांगे आवे ओकरा के भोजपुरी के मान्यता खातिर संसद में आवाज उठावे के कसम खिवाईं, किरिया धराईं। शाईत संसद में पंहुचला का बाद कुछ सांसद लोग के कसम के याद पड़ो आ भोजपुरी के मान्यता के आवाज संसद में बुलन्द करे लोग। आशा बा कि भोजपुरिहा समाज हमार ई प्रस्ताव पर धेयान दिही।

डा.रसिक बिहारी ओझा ‘निर्भीक’ जी के ‘निर्भीक संदेश’ के मार्च 2004 के अंक के सम्पादकीय स्वागत लायक बा। ओहू पर विचार कइल जरुरी बा। उहों के रचना के दरद सतावत बा। रचना के कमी का चलते अंक त देरी से आवते बाड़ी स, बैसाख में फगुआ के गीत छपात बा। भोजपुरी के सभ प्रकाशनन के इहे हालत बा।

हम देख रहल बानी कि एक दशक से भोजपुरी में नयका लिखनिहारन के कमी खटकता। का कारण बा उेह पर विचार कइल जरुरी बा। साईत ओह लोग के प्रोत्साहन नइखे मिलत। भोजपुरी कवि गोष्ठी, कवि सम्मेलन में भी कमी आइल बा। एहू पर विचार करीं सभे। राउर बेबाक विचारन के इन्तजार में बइठल बानी।

कदम चौराहा, बलिया - 277 001

जीवन वृत

# लोक रागिनी के गीत गंधर्व : महेन्द्र मिश्र

डा.रघुनाथ उपाध्याय ‘शलभ’

जब कवनो रचनाकार अपना रचना संसार में उतरेला त, ओकरा अर्नर्मन के अभिव्यक्ति श्रोता आउर पाठक के सामने झलके लागेला। ओकरा अभिव्यक्तिये से रचनाकार के व्यक्तित्व आ कृतित्व दूनू के पहिचान होखेला। रचनाकार अपना देश काल आ परिस्थिति से बहुते प्रभावित होखेला आ अपना रचना जगत में ओही के जिअेला मुअेला। जीवन के घात प्रतिघात अउर उतार चढ़ाव के झेलत अू अपना रचना संसार के निर्माण में लागल रहेला। ए हीसे कवनो रचनाकार के रचना संसार में विविध प्रकार के अभिव्यक्ति अउर सचना के झलक मिलेला। समय अउर समाज कवि अउर गीतकार के उकसावेला, प्रेरणा देला, अउर रचना करे खातिर मजबूर करेला। कवि के भावुक मन समाज के संस्पर्श से सिहर उठेला अउर अभिव्यक्ति खातिर आकुल हो जाला। ओकरा भीतर के आकुलते कल्पना के सहयोग से आपन मुर्त रुप धरेले अउर अभिव्यक्ति के स्तर पर पंहुच के अू जन जन के जीवन में आपन स्थान पा के अमर हो जाले। अपना रचना के साथे साथे रचनाकारो समाज के हर लकीर लांघत अमर हो जाला। एही कारण भोजपुरी के दूगो अनगढ़ हीरा आजुवो अपना चमक से भोजपुरी साहित्य में अंजोर फइलवले बा। ‘बिदेसिया’ के रचनाकार ‘भिखारी ठाकुर’ अउर ‘पूरबी’ के गवइया ‘महेन्द्र मिसिर’ भोजपुरी क्षेत्र के जन जन के दिल दिमाग अउर तन के पोर पोर में समाइल आजुओ चिरनवीन रस घोलत बाड़ें। पूरबी लोकभासा भोजपुरी गीत के एगो खास विधा ह, जवन

महेन्द्र मिसिर के रागरंजित रागिनी से आकार ग्रहण कइके आजुले लोकजीवन के थाती बन गइल बा।

लोककंठ के अमर गायक अउर यशस्वी कवि महेन्द्र मिसिर अद्‌भुत प्रतिभा के धनी रहलन। उनकर व्यक्तित्व बहुआयामी रहल। सुन्दर, सुगठित अउर आकर्षक देह धाजा वाला महेन्दर मिसिर के गोर गार चेहरा आ चमकत लीलार के देख के हजारो हजार का भीड़ो में उनुका के पहिचानल बहुते आसान रहल।सुन्दर नाक नक्श अउर मधुर बानी के धनी महेन्दर मिसिर मरदानी ठसक से सम्पन्न रहलन। कविता अउर गीत रचे के अदृभुत शक्ति उनुका भीतर भरल रहे। अू एगो आशु कवि रहलन।सरस्वती के वरद पुत्र महेन्दर मिसिर के कलकंठ से निसृत गीत जब गूंजत रहे तब सड़क जाम हो जात रहे। उनुकर सबसे बड़हन विशेषता ई रहल कि अू आपने रचल गीत भा कविता गावसु। गायकी का संगे संगे गीत रचे के प्रतिभा से उनुकर ख्याति दूर दूर तक फइलल रहल। आ आजुवो उनुकर पूरबी सुन के मन अतीत का गहराई में डूब के भाव विभोर हो उठेला। गीत गावे का कला में अू जतना दक्ष रहले, वादन कला में भी ओतने प्रवीण। हारमोनियम होखे चाहे तबला, सितार होखे चाहे सारंगी, उनुका अंगुली के करतब देखे वाला बाति रहे। ढोलक झाल आ मंजीरा में त अू माहिर रहले। कबो कबो गोपी प्रसंग के गीत जब बांसुरी के मधुर ध्वनि का साथ अलापत रहसु त वातावरण में जइसे विरह रस घोरा जात रहे अउर वृन्दावन के मनोहारी दृश्य उपस्थित हो जात रहे।

भोजपुरी गायकी अउर कविताई में महेन्दर मिसिर भा महेन्दर द्विज का नाम से चर्चित पूरबी के जनक महेन्दर मिसिर के जनम सारण जिला के मुख्यालय से लगभग 12 किलोमीटर दूर उत्तर काही मिश्रवलिया नामक गांव में 16 मार्च 1887 के भइल रहे। इनकर पिता पण्डित शिवशंकर मिसिर दूगो बिआह कइले रहले। पहिलकी पत्नी गायत्री का कोख से जनमल रहसु महेन्दर मिसिर। महतारी बाप के दुलार में बिगड़ल महेन्दर मिसिर के मन पढ़ाई लिखाई में ना लागल। लरिकाइये से नाच देखे खातिर अू दूर दूर मक गांवे गांव जात रहसु। उनुका जीवन पर एकर ढेरे प्रभाव पड़ल अउर एकदिन अू भोजपुरी गायकी में आपन अलग पहिचान बना लिहलन।

पण्डित शिवशंकर मिश्र एगो छोटहन जमीन्दार रहले। छपरा के एगो बड़हन जमीन्दार हलवन्त सहाय के असूलात क्षेत्र में उनकर सीमा रहल। एहसे पण्डित शिवशंकर मिश्र हलवन्त सहाय के बहुत करीबी बन गइल रहलन। सरकारी कामकाज के चलते सहायजी के घरे मिसिर जी अक्सर आवत जात रहलन। अउर उनुके संगे कबो कबो महेन्दरो मिसिर आवे जाए लगलन।सहायजी के पारखी नजर महेन्दर मिसिर के भीतर के कलाकार के पहिचानत रहल। फेरु सहायजी का दरबार में मिसिर जी के आश्रय मिल गइल अउर उनुका रागिनी के स्वर जन जन तक पंहुचे लागल।

वस्तुतः हलवन्त सहाय के दरबार में कला अउर कलाकार दूनू के खूबे कदर होत रहल। सन्तान विहीन सहायजी के पत्नी असमये साथ छोड़ देले रहली। उनकर एकाकी जीवन बहुते खलत रहे बाकिर अू स्वभाव से शाहखर्च रहलें। उनका दरबार में वैभव विलासिता के भरपूर प्रश्रय मिलत रहे। रइसी ठाटबाट में नृत्य गीत के आयोजन उनका दरबार के विशेषता रहे। एहसे महेन्द्र मिसिर के प्रतिभा में खूब निखार आइल। गीत गवनई के प्रति लगाव उनुका लरिकाइये से रहे। दरबारी संस्कृति के आश्रय पाइके उनकर गायकी खूब फरे फुलाये लागल आ ओकर सुगन्ध हवा में तैरत चारो ओर पसरे लागल। धीरे धीरे समय बीते लागल अउर अू सहायजी के अत्यन्त प्रिय बनत गइलन। सहायजी के कोठी उनुकर घर दुआर बन गइल आ अू उनकर सखा बने के सौभाग्य पा गइलन।

समय अउर परिस्थिति एक समान ना रहेला। ओकरा में बीच बीच में बदलाव आवत रहेला। एगो विचित्र घटना घटल। हलवन्त सहाय के इशारा पर मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध

नर्तकी अउर अपना जमाना के परम सुन्दरी ढेलाबाई के अपहरण हो गइल। एह में महेन्दर मिसिर के भी हाथ रहे। अब ढेलाबाई एगो रण्डी पुतरिया ना रह गइली। अू मोख्तार हलवन्त सहाय के बिआहल पत्नी के समान उनुका हृदया, कोठी, जर जमीन आ जायदाद के मालकिन हो गइली। ढेलाबाई के नाच गान धीरे धीरे छूटे लागल काहे कि ई हलवन्त सहाय के प्रतिष्ठा के खिलाफ रहल।

समय एक बेर फेर करवट लिहलस। सहायजी कहीं लापता हो गइलें कि उनुकर मृत्यु हो गइल। सही बात पता ना लागल। बाकिर ढेलाबाई के देखरेख अब महेन्दर मिसिर के कपारे आ गइल। सहायजी के ना रहला पर उनुकर गोतिया पटीदार ढेलाबाई के कोठी पर धावा बोललन त महेन्दर मिसिर अपना संगी साथियन का सहयोग से ओहनी के खदेड़लन आ ढेलाबाई के बचाव कइलन।

ढेलाबाई आ महेन्दर मिसिर के प्रेम के गहराइ में वासना के कवनो नामो निशान ना रहे। कोमल भावना के रेशमी डोर से दूनो आदमी प्रीति के एगो अइसन बन्धन में बन्हाइल रहे लोग जवना के खेलल बड़ा कठिन रहे। ढेलाबाई आपन पैर के घुंघरु खोल के धई दिहले रहली। उनुकर नाचल गावल सब बिसर गइल रहे। एक रात मिसिरजी अपना शिवाला वाला कोठी पर गीत अलापत रहलन। महेन्दर मिसिर के गीत के बोल अंजोरया रात में मोती अइसन छिटात रहे। ओह मोतियन में अपना आंचर में बटोर के ढेलाबाई आपन घुंघरु फेरु बान्ह लिहली आ खुशी से नाचे लगली। गीत अउर घुंघरु के प्रीति में मिसरी के मिठास घोराइल रहे जवना से कला के मूर्त रुप टहटह अंजोरया में संगमरमर जइसन साफ झलकत रहे। ओह रात के बाद प्रेम में बन्हाइल ढेलाबाई आ महेन्दर मिसिर के जिनगी समय का रथ पर सवार होके बीते लागल।

एही बीच छपरे में मिसर जी के मुलाकात मुक्तानन्दजी से भइल। अू कलकत्ता से कवनो नित्यानन्द के संवाद लेके आइल रहलन कि मिसिरजी बनारस जाके अभयानन्दजी से भेंट करस। मिसिर जी बनारस गइलन त दू तीन महीना ओहीजे रहे के पड़ल। ओह अवधि में उनकर गीत के खूब धूम मचल रहे। बनारस में केसरबाई अउर विद्याधरीबाई से उनकर भेंट भइल। मिसिर जी से संगीत सीख के केसरबाई शिखर पर पंहुच गइली अउर उनकर सोहरत पसरे लागल। बनारसे में मिसिरजी कबीरदास अउर रैदास के जीवन दर्शन से प्रभावित भइलन आ उनुका गीतन में निर्गुण के भाव झलके लागल।

बनारस के बाद मिसिरजी कलकत्ता आ गइलन। संगीत साधना में रत मिसिरजी गीत गा के भीख मांगेवाली एगो भिखारिन के संगीत सीखा के ओकर भीख मांगल छोड़वा दिहलन। ओही क्रम में उनकर भेंट स्वामी नित्यानन्दजी से भइल। नित्यानन्द, अभयानन्द, अउर मुक्तानन्द सब लोग आजादी खातिर अंगरेज सरकार से लड़त रहे लोग। महेन्दर मिसिर भी एही जमात में शामिल हो गइलन।

महेन्दर मिसिर के जिनगी में एगो नया मोड़ आइल। अभयानन्द के सहयोग से मिसिरजी के एगो नोट छापेवाला मशीन मिल गइल। मशीन का साथ मिसिरजी छपरा आ गइलन आ योजनाबद्ध तरीका से नोट छापे के काम चले लागल। मिसिर जी के दरवाजा पर लक्ष्मी लोटाये लगली। फेर से गीत गवनई के समाज जुटे लागल। नोट छापे के धंधा के पीछे आजादी के लड़ाई लड़ेवाला आ ओकरा परिवार के मदद के उद्देश्य रहे। ओह घरी अभाव के मारल कवनो दीन दुखिया उनुका दुआर से खाली हाथ ना लौटत रहे।

मिसिर जी के कारनामन के जानकारी धीरे धीरे हुकुमत के हो गइल। जांच करे आ सबूत जुटावे खातिर सी आई डी इन्सपेक्टर सुरेन्द्रनाथ घोष के जिम्मेदारी मिलल। अू आपन नाम गोपीचन्द बता के मिसिरजी के इहां नौकरी करे लगलन। कुछ ही दिन में अू मिसिरजी के विश्वासपात्र बन गइलन। जब गोपीचन्द के सब जानकारी मिल गइल त उनुका इशारा पर पुलिस के छापा पड़ल आ मिसिरजी जेल के भीतर चल गइलन। देश के आजादी खातिर

मिसिरजी के जिनिगी कबो बक्सर जेल त कबो आगरा जेल में बीते लागल। उनुका गीतन में अब अंगरेजन के प्रति आक्रोश के झलक भी मिले लागल –

'हमरा नीको ना लागे राम, गोरन के करनी,
रुपिया ले गइले, पइसा ले गइले, ले गइले सारा गिनी।'

आजादी के लड़ाई के हिसाब से देखीं त मिसिर जी के चेहरा साफ साफ बेदाग दिखाई दी। बाकिर उनुका जेतना महत्व मिले के चाहीं ओतना ना मिलल आ ऊ आजादी के लड़ाई के एगो उपेक्षित पात्र बन के रह गइलन। बाकिर उनकर गीतन के विशेष भूमिका उनुका व्यक्तितत्व के उपर उठावे में बा। संगीत साघना अउर राग रागिनी उनका जीवन के अभिन्न अंग रहे। उहे उनकर थाती रहे अउर ऊ थाती आजुओ जन जन के कंठ रुपी झोली में सुरक्षित बाटे। गजल, दादरा, टप्पा, निरगुन, खेमता, खयाल, कजरी, बारहमासा अउर खास करके पूरबी उनुका संगीत स्वर लहरी में हिलोर लेत रहे। पूरबी के त ऊ जन्मदाता रहलन। उनकर गीत आवेग के उमड़ घुमड़ में अनजाने उनुका कण्ठ से निकल के होंठ पर आके आकार ले लेत रहे। उनुका गीतन में पहाड़ी नदी के वेग के तरल तीव्रता बा, त झीर झीर बहत शीतल मन्द बयार के सुखद संस्पर्श भी बा। भासा के सहजता अउर भाव के गहराई उनुका गीतन के असली पहचान ह, जवना के मिसिरी अइसन मिठास में केहू के अन्तर्मन के बेधे अउर बान्धे के स्वाभाविक शक्ति भरल बा। उनका पूरबी गीतन में परदेशी पति के विरही नायिका के विकलता अउर सास के निष्ठुरता के भावमय चित्र देखल जा सकेला –

'सासु मोरा मारे रामा बांस के छिउकिया,
ऐ ननदिया मोरी रे, सुसुकत पनिया के जाय।
गंगा जमुनवा के चिकनी डगरिया,
ऐ ननदिया मोरी रे, पउंवा धरत बिछिलाय।
–
गावत महेन्दर मिसिर इहो रे पुरबिया,
ऐ ननदिया मोरी रे, पिया बिनु रहलोना जाय।'

वस्तुत: महेन्दर मिसिर लोककंठ के कवि रहलन। एहसे उनुका गीतन में माटी के मिठास के संगे गांव गंवई के गमगमात गंधो भरल बाटे। उनुका हृदय के हर धड़कन में अउर उनुका हर सांस में भोजपुरी के रसगंध रचल बसल बाटे। उनुका गीत के गगरी से अमरीत छलक छलक के लोगन के हियरा के जुड़ावेला आ हिलोर उठावेला। उनुकर गीत हृदय रुपी सागर के मथ के पोर पोर में विरह के जहर अइसन भर देला जइसे कराल नागिन के डंसला से पोर पोर में लहर उठे लागेला। विरह कातर नायिका के विरह दशा के एगो चित्र में उनुकर गीत केतना भावमय हो उठल बा –

'अंगुरी में डंसले बिया नगिनिया रे,
ए ननदी, दियरा जरा दे।
दियरा जरा दे, अपना भैया के बोला दे,
पोरे पोरे उठेला लहरिया रे,
ए ननदी, दियरा जरा दे।'

भोजपुरी गीत के दुनिया में आपन एगो अलग पहिचान रखे वाला गीतकार महेन्दर मिसिर प्रेम अउर सौन्दर्य के कवि रहलन। उनुका गीतन में श्रृंगार रस के अन्तर्गत संयोग अउर वियोग दूनो के सफल निर्वाह भइल बा। नायक से एक रात ठहर जाये के नायिका के अनुनय विनय में प्रेम अपना पराकाष्ठा पर पंहुचा के केतना तरल अउर तीव्र हो गइल बा, एकर एगो उदाहरण देखे जोग बा –

'होत ही पराते चली जइह राजा,
तनिक भर बाल बतिया ल राजा।
रूसब त जिनगी अन्हार होई जाई,
अइसन पियार कतहीं ना भेंटाई।
रात दिन कुन्हरेली नेहिया के दियरी,
नेहिया के बाती उसका के जइह राजा।'

महेन्दर मिसिर एगो अद्‌भुत कवि रहलन। ओइसे त श्रृंगार में संयोग अउर वियोग के वर्णन परम्परागत चलत आवत बा, बाकिर महेन्दर मिसिर अपना गीतन में वियोग के जवन वर्णन कइले बाड़न, ऊ लोकभासा के मिठास से नया रुप रंग पाई के आपन अर्थछटा पसारे में पूर्ण समर्थ बा। गोपी विरह के प्रसंग पुरान

हवेश बाकिर मिसिर जी के शब्द विन्यास से ओकरा में भावमयता आ गइल बा। उदाहरण के तौर पर एगो गीत देखल जा सकेला –

'सूतल सेजरिया सखी देखनी सपनवा,
निरमोही कान्हा, बंसिया बजावे ले हो लाल।
कहत महेन्दर मिसिर श्याम भइले निरमोहिया,
से नेहिया लगा के दागा कइले हो लाल।'

विरह के आंच में तपल महेन्दर मिसिर के गीत केहू के हिया के बेधके अइसन खखोरेला कि मन बेकल हो उठेला। जनश्रुति में एहसे जुड़ल एगो तथ्य आजुओ सुने के मिलेला किजब महेन्दर मिसिर जेल के भीतर से रात में आपन विरह गीत अलापसु त जेलर के पत्नी गीत सुन के विह्वल हो जात रहली। सचमुच ओह गीत के सुन के केकर हिया ना पसीज जाई –

'आधी आधी रतिया के कुहुके कोइलिया,
राम बैरनिया भइले ना।
मोरा अंखिया के निनिया
राम बैरनिया भइले ना।
कुहुकि कुहुकि के कुहके कोइलिया,
राम अगिनिया धधके ना।
मोरा छतिया के बीचवा राम,
अगिनिया धधके ना।'

उनुका गीतन में भाव के गहराई कतना बा, एकर थाह लगावल कठिन बा। जो कुछ भी होखे महेन्दर मिसिर के गीत कोमल कल्पना के पांख फैला के उन्मुक्त गगन में गूंजत आ हवा में तैरत आजुओ रस घोलेला। एकर एगो खास कारण ई बा कि उनुकर गीत सुष्ठु भाव से ओत प्रोत सहज स्वाभाविक भाषा में लवंग के डार अइसन लचकत एगो अइसन आकार ग्रहण करेलाए जवना में अलंकार अपने आप समाई के गीत के शोभा बढ़ावे में सहायक हो जाला। पुनरुक्ति उपमा अनुप्रास से अलंकृत उनुकर एगो गीत सुनल जा सकता –

'कांचे कांचे कलियन पर भंवरा लोभइले,
मोर संवरिया रे घुरुमि घुरुमि रस लेस।
महुआरि अंखिया जुलुमि नजरिया,
मोर संवरियारे जुलुमीबा घुंघर वाली केस।'

महेन्दर मिसिर के गीतन में राधाकृष्ण प्रसंग के अतिरिक्त राम जानकी के भी प्रसंग के खूब चर्चा भइल बा। उनुकर 'अपूर्व रामायण' सात काण्ड में अपना सम्पूर्ण मार्मिकता से ओत प्रोत भोजपुरी के धरोहर बा। संत कबीर अउर संत रविदास के जीवन दर्शन से प्रभावित 'निरगुन' के रुप में उनुकर गीत जन जन में आजुओ आदर अउर सम्मान बटोरे में समर्थ बा –

'एके गो मटिया के दू दू गो खेलवना,
मोर संवरिया रे, रचे वाला एके गो कोहार।
कवनो खेलनवा के अटपट गढ़निया,
मोर संवरियारे, कवनो खेलवना जिउआ मार।'

संगीत साधक अउर पूरबी के पुरोधा महेन्दर मिसिर के रचना संसार व्यापक बा, जवना में माटी के महक, भाषा के लचक, अउर राग रंजित रागिनी के अपूर्व संगम देखे के मिलेला। उनुकर कवितन के अन्तिम उद्देश्य बा लोकहित। मानवता से बढ़ के कुछ नइखे अउर मनुष्य जीवन बड़ा भाग्य से मिलल बा। एकर अंत एकदिन सुनिश्चित बा। तबे त उनुका अन्तरात्मा से ई पुकार निकलल –'अंत में चढ़िह आठ काठ के खटोली में'। जीवन के जब इहे गति बा त उनुकर गीतो मानवता के उंचाई पर पंहुच के लोकहित के उद्घोषक बन गइल बा –

'कहत महेन्दर मिसिर लाखन में एक बात,
काहू को सताव मत, अंत मरि जाना है।'

वाणी बसेरा, मंदाकिनी मार्ग, कश्यप नगर,
हल्दी, बलिया

समीक्षात्मक लेख

# एगो दिया जरेला

डा. तैयब हुसैन पीड़ित

मोती बी.ए. भले मोतीलाल उपाध्याय हो खस, एम.ए., बी.टी., साहित्यरत्न। बाकि ऊ विजयेन्द्र स्नातक नियन खाली मोती बी.ए. बाड़न। असल में इहे ऊ डिग्री ह जवना से भारी से भारी प्रतियोगिता परीक्षा में आदमी शामिल हो सकेला, आ बन सकेला बड़ से बड़ ओहदा के हकदार।

मोती बी.ए. के हम जो एह संदर्भ में उनकर साहित्य लेके परखीं त साफ लउकी कि एगो कवि आ 'मृगतृष्णा', 'कवि और कविता', 'समिधा', 'कवि भावना', 'मानव', 'अश्वमेध यज्ञ', 'आंसू डूबे गीत', 'बादलिका', 'पायल छम छम बाजे', 'हरसिंगार के फूल', 'प्रतिबिम्बनी', 'कुछ गीत कुछ कविता', 'गीत के चरण', 'लाहौर की नहर', 'तिनका तिनका', 'शबनम शबनम', 'इश्के गुहर', 'दर्दे गुहर', 'राशन की दुकान', 'इतिहास का दर्द', 'सेमर के फूल', 'मोती के मुक्तक', 'बन-बन बोलेले कोइलिया', 'भोजपुरी सॉनेट', 'तुलसी रसायन', जॉन ड्रिंक वाटर के नाटक 'अब्राहम लिंकन' के अनुवाद, शेक्सपियर के 'सॉनेट', राबर्ट ब्राउन के 'रवीबेन राजरा', कालिदास के 'मेघदूत' के भोजपुरी पद्यानुवाद, एस टी कॉलरीज के 'दि क्लसेड डे मोजेल' के हिन्दी पद्यानुवाद, अलग से अंग्रेजी में 'लव एण्ड ब्यूटी' सॉनेट के रचना; यानी हिन्दी, भोजपुरी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत तकले के रचना-उचयउचयसंसार आ, अउरो ना त-उचय 'दैनिक अग्रगामी', 'दैनिक आज', 'दैनिक आर्यावर्त', 'दैनिक संसार' आदि का माध्यम से पत्रकारिता; फेर एकलव्य, नदिया के पार, कैसे कहूं, सुभद्रा, भक्त ध्रुव, रामवाण, सुरेखा हरण, इन्द्रायन, काफिला, राम विवाह, किसी की याद, रिमझिम, साजन, सिन्दूर, गजब भइले रामा, ठकुराइन, चम्पा चमेली आदि हिन्दी भोजपुरी फिल्मन में गीत रचना क के सचहूं साहित्य आ कला के हर परीक्षा के ग्रेट तूड़ेवाला बी.ए. बानीं। ई उनकर काबिलियत ह कि उन्नीस सौ उन्तालिसे चालीस से हे खानी ले उहो के लेखन से अवकाश ना ग्रहण कइले रहीं। जबकि गुलाम भारत आजाद भइल आ कई माने में गुलामी तरफ बढ़ियो रहल बा।

तत्काल नीमन जबून रचना के मूल्यांकन आ मान सम्मान के बात छोड़ियो दीं त अइसन मनई खातिर उनके पाँती उधार ले के कहे ला पड़ी कि –

'एगो दिया जरेला  
जवन कहियो ना बुताय  
जवन परे ना लखाय  
जवन हारे ना बिकाय  
जवन कोन अंतरा सगरे  
अंजोर करेला  
एगो दिया जरेला  
एगो दिया जरेला।'

अपना से लगभग तीन दशक बड़ कवि के अतना लमहर लेखकीय व्यक्तित्व पर हमरा लेखा अदना आदमी के कुछ कहल छोट मुंह बड़ बात कहाई। एहसे फिलहाल हम अपना के उनुका कुछ चुनल भोजपुरी कवितन पर केन्द्रित करब। उहो एह अधिकार से कि उहाँ के हमरा प्रति जबतब अपना चिट्ठियन में छोट भाई के सनेह दरसवले बानीं आ बेबाक आत्मीयता जता के हमराके आपन मुंहलग्गू बना देले बानीं।

उनकर भोजपुरी रचना देखते काहेदो हमरा अंग्रेजी के शेली, कीट्स, वर्ड्सवर्थ, आ हिन्दी के छायावादी कवियन के इयाद आवे लागेला। भोजपुरी काव्य साहित्य में जो आदि कवि कबीर से अबतक के कवियन के देखल जाय त ओकर विकास हूबहू हिन्दी अइसन ना लउकी। हिन्दी में एगो महत्वपूर्ण काल 'रीति काल' रहे जवना में आचार्य कवि लक्षण के आधार पर काव्य रचना कइलन। अलंकार छंद पर विशेष ध्यान देलन। राज दरबार में रह के शृंगार के नाम पर नारी के देह के ओर अंत लगा देलन। भोजपुरी में स्व.पण्डित धरीक्षण

मिश्र के काव्य तनिक एह काल से खाली ल क्षण के आधार पर आ कवि तेगअली तेग के गजल कुछ हद तक मांसल सिंगार लेके मेल खाई, बाकी में एह काल के प्रभाव नदारद बा। हँ, ईश्वर भक्ति, वीरता, वायवीय शृंगार, प्रकृति प्रेम, राष्ट्रीयता आ आज के विडम्बना एहमें झांकत लउकी।

श्री मोती बी.ए. के भोजपुरी कवितन पर सरसरी नजर डलला से पता चलता कि अू रहस्य-अध्यात्म, रोमांस-खास करके विरह पक्ष, देशभक्ति से ले के आजुके राजनीतिक विसंगतियन पर कलम चलवले बाड़न। बाकिर उनुकर मन रमल बा वियोग शृंगार आध्यात्म आ प्रकृति प्रेम में। बलुक हम त ई कहे चाहेब कि हर जगह प्रकृति में उनुकर आलम्बन रहल बा। अू चाहे फिल्मी गीतन में –

1 –

'काटे ना कटे मोरा दिनवा,
गवनवा कब होई ?'

– 'एकलव्य'

2 –

'कठवा के नईया बनईहे रे मलहवा,
नदिया के पार दे उतार',

अउर,

3 –

'मोरे राजा हो ले चल नदिया के पार,
मोरी रानी हो तू ही मोरा प्राणाधार'

–'नदिया के पार'

– होखे भा आध्यात्मिक गीतन में –

1 –

'सुगना, सेमर के फूले
का एतना लपटाइल बाड़,
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो'।

–'सेमर के फूल'

2 –

'हमहूं देखनी एगो अइसन फूल फुलाइल बा,
सगरे लोग मोहाइल बा ना,
पतझड़ के बादे बसंत काहे आवेला,
कवन माली बइठल बइठल
ई जोगाड़ लगावेला।
डाढ़ी पाती मोजरी फूल,
सोना अइसन चमके धूरि,
रउरा खोजलीं, जिनगी फूलवे में हेराइल बा,
सगरे लोग मोहाइल बा ना।'

–'अइसन फूल फुलाइल बा'

3 –

'तनी अउरी दउरअ हिरना
पा जइबअ किनारा।'

–'मृग तृष्णा'

अउर

4 –

'दउरे ल अनेर तू, पंहुचले में देर बा।
बुझी ल बचन ई, समुझला के फेर बा।
होखअ तू सचेत पहिले, होखति दीवाना,
चारो ओरिया खोजी अइल पवल ना ठेकाना।'

–'मृग कस्तुरी'

अइसहीं प्रकृति वर्णन में – 'महुआ बारी में बहार', 'ते काहे आवे ल', आ 'चिरई हो चिरई' के नाम लिआई। एह तीनों में पकृति कहीं जानदार बनि के आईल बा (प्रकृति के मानवीकरण), कहीं जिज्ञासा बनि के (रहस्यवाद), त कहीं कवि के प्रेम प्रकट करे के बहाना बनत। विम्ब आ प्रतीक निछक्का लोकसंसार से लेहल आ व्यावहारिक अतना कि 'महुआबारी में बहार' में महुआ के कोंचिअइला से ले के चूअला तक के पहचानल तस्वीर स्वाभाविक रुप से उरेहाइल बा –

'असों आइल महुआबारी में बहार सजनी,
कोंचवा मातल भुईयां छूवे,
महुआ रस रस चूवे।
जबसे बहे भिनुसार के बेयार सजनी।'

आ, 'चिरई हो चिरई' में चिरई के माध्यम से शब्द में ध्वन्यात्मकता का साथे ओकरा

अवसाद भरल जिनगी के अइसन फोटो जवन आदमी के सुख दुख साथे ओकरा घनिष्ठता से आउर गझिन हो गइल बा -

'चेंव-चेंव, चेंव-चेंव, चिरई हो चिरई
खिचड़ी खइबू कि खइबू सतुआ ?
लबरी खइबू कि पीड़िया घोरुआ ?
भरूआ मरीचा, आम के चटनी,
ओकरी उपर सोजहग मूरई।
.........................
खेते जइबू कि कीरा खइबू ?
टाँगुन रहिला कतहीं ना पईबू।
हमरे अँगना भँगना लोटे,
जब तू अइबू तब पछितइबू।
कहवाँ बनइबू आपन खतोना,
आगि लागल बा गंवई गंवई।'

एतने ना, ओकर अकुलाहट आ तड़प 'हाइकू' जइसन छोट बन्द के रचनो में देखल जा सकेला -

1 -

'लागलि आगि,
कहवाँ जाईं माई ?
जरे खतोना।'

2 -

'दूध पियबे,
कि लोर छएलवा ?
तोर मरजी।'

थोड़ा में वइसे त भोजपुरी के कईक गो अइसन कवि बाड़न जेकरा में अलग अलग ई कुल्हि - ईश्वर प्रेम, प्रकृति प्रेम, देश प्रेम, आ लौकिक प्रेम - लउकी, बाकि एके साथ एके कवि में ई मणि कांचन संयोग कहाई, जवन मोती बी.ए. में बा।

दोसर अपना अलग अलग भाव खातिर प्रकृति के एतना रुप में प्रयोगो एके कवि में विरले मिलेला। हँ प्रकृति आदि काल से आज ले प्रयोग में आइल बा आ भिन्न-भिन्न वाद के कवि अपना-अपना ढंग से एहसे काम लेले बाड़न बाकि मोती बी.ए. कन त जइसे रहस्यवाद, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आ समकालीनता एके साथे विराजमान बा आ प्रकृति से तदनुकूल अलग-अलग काम लिया गइल बा। अब देखीं ना आज के सन्दर्भ में प्रकृति के प्रयोग -

1 -

'कइसे चली नाइ, ई त नइये में छेद बा।
पछिम कांग्रेसी जे बा, पूरब सोसलिस्ट बा।
रहनि जनसंघी बाटे, चलन कम्युनिस्ट बा।
लाल बा लंगोटा एकर, टोपिए सफेद बा।
कइसे चली नाइ, ई त नइये में छेद बा।'

2 -

'दाल रोटी आ माठा जो मिलत रहीत,
जबले गमछा में भुंजा आ भेली रही,
तेल सरसों के बुकवा जो लागल करी,
अपने किस्मत पर झँखत चमेली रही।'

हमरा त बुझाता कि इहे प्रेम रोग उनुका से शेक्सपियर के सॉनेट आ कालिदास के मेघदूतम के पद्यानुवादो करवले बा। ई अलग बात बा कि उनकर प्रेमिका वर्ड्सवर्थ के लूसीग्रे मतिन काल्पनिक हो सकेली अथवा छायावादियन मतिन वायवीय। तबो हम चाहब कि कवि के हिया में प्रेम के ई दिया अनन्त काल ले जरत रहो।

हिन्दी विभाग, जेड..ए.इस्लामिया कालेज,
सीवान - 841226

कविता

# बसंत गीत

दिनेश

अबकी बसंत में शहीदी रंग टहकल।
अबकी फगुनवा विप्लवी गंध महकल।
पांच बरिस में पांच करम भइले।
देश के किसान सब बन्हकी रखइले।
खेतीहर मजदूर सब जेने तेने गइले।
खेती बाड़ी छोड़के किसान मरी गइले।
तेलहन के जगह सोयाबिन ना रोपाई।
निरबंसिया बीज नाहीं खेत में बोआई।
फेरु आइलबा फिरंगिया मन हमार दहकल।
अबकी बसंत में शहीदी रंग टहकल।
अबकी फगुनवा विप्लवी गंध महकल।

नेहरु के सपना निजी क्षेत्र में बिकाइल।
सबकर चीज निजी हाथ में धराइल।
सोना उगलत खेत केतने पट्टा पर दिआई।
नीम हल्दी लेखे जड़ी बूटी चली जाई।
काबुल इराक मेंसाम्राज्यवादी बा सहकल।
संगे संगेमिल फासीवादी बा बहकल।
चेत चेत लोगबाग, काहे बाड़ छटकल।
दोमुंहा नेता बाड़े बाकि सबे भटकल।
क्रान्ति के रंग भर लेके पिचकारी,
छर छर उड़े जइसे उड़े चिनगारी।
याद अइले कुंवर सिंह मन हमार चनकल।
याद अइले भगत सिंह मन हमार लहकल।

-0-0-

कविता

# हम बेईमान

दिनेश

हम बेइमान भइया हम बेईमान,
वोटवा में बेचब आपन धरम ईमान।

काहे नाहीं जीती सब नेता शैतान।
मिलल सुर ब्लेयर बुश के मिटल अफगान।
मिटले ईराक भैया मिटले सद्दाम।
आफते में मिलली सरस्वती शैतान।

एही खातिर बिके लागल खेत खलिहान।
पट्टा पर दिआये लागल सारा हिन्दुस्तान।
बेंच दीहले सब हीरा मोती के खदान।
केहू नइखे पूछत काहे मुअता किसान।

भस्मासुर के देहब हम देश के कमान।
हम बेइमान भइया हम बेईमान।

-0-0-

नेहरु नगर, आरा - 802 301

बेबाक

# हिन्दुस्तान के हालचाल

## बर्बरीक

आज तब हम ई लिख रहल बानी त चौदहवीं लोकसभा चुनाव 2004 के चार में से दू चरण के वोट हो चुकल बा आ कुल 542 में से 278 सीटन के फैसला ईवीएम मशीनन के अन्दर जमा हो चुकल बा। एक्जीट पोल आ ओपीनियन पोलन के दौर जम के चल रहल बा। अधिकतर के अन्दाज बा कि अगिला लोक सभा में भाजपा गठबन्धन आगे त रही बाकिर साफ बहुमत मिले के उम्मेद नई खे।

बर्बरीक के याददाश्त अतना कमजोर नइखे कि अू एह बात के भुला जाव कि आजतकले कवनो ओपीनियन भा एक्जीट पोल भाजपा के ओतना सीट नइखे देले जेतना ओकरा वास्तव में मिल जाले। आ कांग्रेस के जेतना सीट ई लोग अपना पोलन में देला ओकरा से अू हमेशा कमे पर सिमट जाले। बा केहू जे ए हकर विश्लेषण करके हमरा के समझा सको?

अधिकतर पत्रकार बन्धुलोग भाजपा के गरिया गरिया के आनन्दित होखेला। ओह लोग के वश चलित त अू लोग भाजपा के बान्ह झान्ह के कहिये हिन्द महासागर में फेंक देले रहित लोग। बाकिर ओह लोग के दुर्भाग्य कि भाजपा ओह लोग के सरापला के बादो आगहीं बढ़ल जात बा।

हमार अन्दाज बा कि एह चुनाव में भाजपा के राजग गठबन्धन के 292 से दस कम ज्यादा सीट मिली। कांग्रेस गठबन्धन के करीब 170 से 200 का बीच अउर आकि बाकी लोगन के कुल मिलाके 60 से 70 सीट। राजग गठबन्धन के अटल के जगह लूटे खातिर कांग्रेस गठबन्धन में चार गो नेता त दूरे से लउकत बाड़न - सोनिया, लालू, शरद, आ रामविलास। चुनाव भले एकसंगे लड़ल होखे लोग प्रधानमन्त्री बने के बेरा केहू दोसरा के माने खतिर तइयार ना होखी।

एगो कहाउत ह सब छंवड़ी झूम्मर पाड़े त लंगड़ी कहे हमहूँ। तनी मनी मउका मिल जाव त जार्ज साहब से लेके मुलायम भाई अउर मायावती बहिनजी भी आपन चाल बदे खातिर बेचैन बा लोग। मिले त मारीं ना त बाल ब्रह्मचारी वाला अन्दाज में सबहीं बा।

बर्बरीक ई नइखे कहत कि राजगे बढ़िया बा। ओकर त मजबूरी बा कि अू राजग के बहुमत के कामना करो। ना त बाकि सब अपने में माल चाभे खतिर अू कुकुरहट करीहें स कि माले गायब हो जाई। राजगो में अटल का बाद जूतमपैजार भईला के गुंजरइस बा। बाकिर नागपुर के नियन्त्रण का चलते शायद बात सम्हल जाव।

छव साल के शासन में सबसे निफिकिर काम क के मुरली मनोहर जोशी अू काम कइले बाड़न कि संघ उनकर नाम याद राखी। देश के संस्कार, भाषा, सभ्यता, अउर संस्कृति आ इतिहास पर काबिज होखे के उनुकर सब योजना अबले सफल भईल बा आ मौका मिली त अू आगहूं ओही राह पर चलिहें। राजग के गैरसंघी लोग यदि सावधान रही त अगिला सरकार में मानवसंसाधन पर संघ के बेलगाम नियन्त्रण के मौका ना दीही। ना त फेर मौका ना मिली शिकायतो करे के। बाद में ई मत कही लोग कि बर्बरीक चेतवले ना।

गीत

# गरीबा के दुख ना ओराय

कन्हैया पाण्डेय

डहकि-डहकि रोये टूटही मड़ईया,
हँसले महलिया ठठाय।
जँगरा ठेठावते में जिनिगी ओरईली,
गरीबा के दुख ना ओराय।

भोरवा से रतिया ले लमहर खटनिया,
मटियामें मिली जाले सगरी जवनिया।
मँथवा पर अउन्हल दुख के पहाड़वा,
रहि रहि रोज अरराय।

तिक्खर घामवा में जरि जाले देहिया,
तवना पर टूटे नाही धरती से नेहिया।
सहलो प कठिन कलेशवा विपतिया,
कबहूँ ना सपनवा फुलाय।

धरती के लालवा बनल बा भिखरिया,
कइसो बचवले बा माथ के पगरिया।
खूनवा पसीनवा से सँचल इजतिया,
कउड़ी के मोलवा बिकाय।

कसि के बन्हाइल जाता गरवा में फँसरी,
तड़पेले जालवा में जइसे कि मछरी।
हरिअर लकड़ी गरीबवा के जिनिगी,
सुनुगे ना लहके बुताय।

बंसिया के धुनि सुनी फंसि जाला हिरना,
तेजि देला आपन परनवा के बिरना।
प्रेम के मिसिरिया में घोरल सनेहिया,
छने छने मतिया भोराय।

जँगरा ठेठावते में जिनिगी ओरईली,
गरीबा के दुख ना ओराय।

-0-0-

मकान न. - 2ए/298
आवास विकास कालोनी, बलिया